रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारियै ।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी, अधानि कहूँ नहिं आनि तिहारियै ।।
एक ही जीव हुतौ सु तो वायौ, सुजान, संकोच औ सोच सहारिये ।
रोकौ रहे न, दहै घनआनंद बावरी रीझि के हाथन हारियै ।।

(ग) चाह नहीं में सुरबाला के, गहनों में गूंथा जाऊँ ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध, प्यारी को ललचाऊँ ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊ ।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक

**अथवा**

एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
में पूछता हूँ -
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है ।



25/7/23 (EVE)

[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 2066** **F**

Unique Paper Code : 2055091003

Name of the Paper : हिन्दी भाषा और साहित्य का उद्भव और विकास (GE) – C

Name of the Course : **B.Com. (Programme)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

Ramanujan College Library

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित में से किंही **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिये :- (12×12=24)

(i) हिन्दी भाषा का अर्थ बताते हुए उसके स्वरूप पर विचार कीजिए ।

(ii) ब्रजभाषा का सामान्य परिचय दीजिए ।

(iii) निर्गुण भक्तिकाव्यधारा की प्रमुख प्रवृतियों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए ।

(iv) प्रगतिवाद की सामान्य विशेषताएँ बताइए ।

2. पाठ्यक्रम में संकलित कबीर की साखियों का सार अपने शब्दों में लिखिए । (12)

**अथवा**

सूरदास के काव्य कला पर प्रकाश डालिए ।

3. बिहारी के काव्य सौंदर्य का परिचय दीजिए । (12)

**अथवा**

घनानंद के काव्य में निहित प्रेम-व्यंजना पर विचार कीजिए ।

4. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता के महत्व पर प्रकाश डालिए । (12)

**अथवा**

"रोटी और संसद" कविता का प्रतिपाद्य लिखिए ।



5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(क) गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पांय ।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियों बताय ।।
पाहन पूजै हरि मिले, तो मै पूजों पहार ।
याते ये चक्की भली, पीसि खाय संसार ।।

**अथवा**

उधो, मन न भए दस बीस ।
एक हुतो सौ गयौं स्याम संग, को अवराधे ईस ।।
सिथिल भई सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस ।
स्वासा अटकिरही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस ।।
तुम तो सखा स्यामसुन्दर के, सकल जोग के ईस ।
सूरदास, रसिकन की बतिया पुखों मन जगदीस ।।

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ
जा तन की झाई परे, स्यामु हरित दुति होई ।।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात ।
भरे भौन मैं करत हैं, नैननु ही सब बात ।।

**अथवा**